Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता

डॉ. भरत अ. पटेल

विजयनगर आर्ट्स कोलेज, विजयनगर (गुजरात)

मध्ययुग में आविर्भूत भक्ति-आंदोलन एक महान सांस्कृतिक घटना मानी जाती है | भक्ति-काव्य का सर्जन इस युग की सबसे बड़ी देन है | लगभग तीन सौ वर्षों से भी ज्यादा समय तक चले इस भक्ति-आंदोलन में भक्ति की जो अन्तर्धाराएँ प्रवाहित हुई , इनमें निर्गुण-भक्ति का अपना विशेष महत्त्व है | कबीर निर्गुण पंथ के प्रमुख आधारस्तंभ हैं | कबीर द्वारा प्रवर्तित निर्गुण पंथ सहज भक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है , जिसमें वर्ग, वर्ण , धर्म ,जाति और संप्रदाय का कोई महत्त्व नहीं होता -“ जाति पांति पूछे नहीं कोइ , हरि को भजे सो हरि का होइ |” कबीर का जन्म विधवा ब्राह्मणी से हुआ था और पालन-पोषण नीरू एवं नीमा नामक जुलाहा दंपति द्वारा हुआ था | कबीर अनपढ़ थे , किन्तु जगत को उन्हों ने खुली आँखों से देखा-परखा था | वे कहते हैं -“ मैं कहता हौं आँखिन की देखी , तू कहता कागद की लेखी |” अत: उनकी बानियों में जीवनानुभवों से प्राप्त सत्य का साक्षात्कार होता है | यही करण है कि लगभग छ: सौ वर्ष पूर्व कही-लिखी गई कबीर की बानियाँ आज भी इतनी ही प्रासंगिक है |

बढ़ते समय के साथ जगत में भौतिक सुविधाएँ , साधन-सामग्री , सुख-वैभव आदि में वृद्धि अवश्य हुई है , किन्तु मानव सहज वृत्तियों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है | अत: मानव सहज दुर्वृत्तियों के कारण मानव समाज में विसंगतियाँ आज भी मौजूद है | कबीर ने अपने युग की जिन-जिन विसंगतियों पर व्यंग्य किया था , वह आज के आधुनिक युग में भी उतना ही प्रासंगिक , सार्थक , और सटीक प्रतीत होता है |

कबीर ने पौराणिक हिन्दू धर्म के बाह्याचारों , धार्मिक पूजा ,उत्सव , मूर्ति की उपासना , तीर्थस्थानों का पर्यटन , ब्राह्मणों के कर्मकाण्ड आदि को ढकोसला समझकर उनका कटु विरोध किया है –

" जप तप दीसै थोथरा , तीरथ व्रत बेबास |

सूवै सैबल सेविया , यों जग चल्या निरास || " १

कबीर के मतानुसार जप-तप , तीर्थ , व्रत तथा विभिन्न देवताओं में विश्वास सब अर्थहीन प्रतीत होता है | इनमें विश्वास रखनेवाला उसी प्रकार निराश होता है ,जिस प्रकार तोता समर के फल पर चोंच मारकर निराश होता है | राम के नाम का जाप करनेवाले ढोंगी तथा तीर्थाटन एवं नदियों में स्नान कर पुण्य एकत्रित करनेवाले लोगों पर कबीर ने चुटीला व्यंग्य किया है -

" तीर्थ करि करि जग मुवा , डूंघै पाणी न्हाइ |

राम ही राम जपंतडां , काल घसीटयाँ जाइ || " २

कबीर ने ऐसे व्यक्तियों का विरोध किया है जो माला हाथ में लेकर फेरते रहते हैं , किन्तु उनका मन विषय-वासनाओं में डूबा रहता है | प्रभु का स्मरण मात्र दिखावा होता है -

" कबीर माला काठ की , कहि समझावै तोहि |

मन न फिरावै आपणो , कहा फिरावै मोहि || " ३

अर्थात काठ की माला फिराने से क्या मतलब ! माला उपदेश देते हुए कहती है मुझे फिराने से कोई लाभ नहीं होगा , जबतक तेरा मन विषय-वासना में डूबा रहेगा | अत: तू मुझे फिराने की जगह अपना मन फिराकर प्रभु में लगा |

कबीर ने उन लोगों का खंडन किया है जो साधुओं का वेश धारण करते हैं पर मन माया के पंक में डूबा रहता है | लम्बी-लम्बी मालाएँ धारण करनेवाले झूठे साधुओं पर इस प्रकार व्यंग्य करते हैं -

" माला पहरया कुछ नहीं , रुल्य मुवा इहि भार |!

बाहरि ढोल्या हिंगलू , भीतरी भरी भंगारी || " ४

अर्थात् माला धारण करने मात्र से साधु की प्रभु-भक्ति सिद्ध नहीं होती | यदि मन प्रभु-स्मरण से दूर हो तो मालाएँ सिर्फ शरीर पर बोझ सिद्ध होती हैं | इसी प्रकार रात-रात भर भजन-कीर्तन करनेवाले पाखंडी भक्तों पर कबीर ने सीधा प्रहार किया है -

" करता दीसै कीरतन , ऊँचा करि करि तुंड |

जाणई बुझे कुछ नहीं , यों ही आधा रुंड || " ५

अर्थात् आत्मज्ञान से रहित व्यक्ति ऊँचे स्वर में कीर्तन भले ही करता रहे इससे कोई लाभ नहीं , जैसे युद्ध में बिना मस्तक लड़ते धड से क्या लाभ !आज के इस युग में ऐसे बनावटी साधु पग-पग पर मिल जाते हैं जो बाह्याडम्बर करके लोगों को ठगते हैं | अत: कबीर के ये दोहे आज के समय में भी बिलकुल प्रासंगिक लगते हैं |

कबीर ने वर्ण , धर्म , संप्रदाय और जाति भेद को अमान्य करते हुए सभी मनुष्यों को भक्ति का समान अधिकारी माना है | मनुष्य ऊँची जाति से नहीं अपने गुणों एवं कर्मों से श्रेष्ठ बन सकता है | वे कहते हैं -

" ऊँचे कुल का जनमिया , करनी ऊँच न होय |

स्वर्ण कलश मदिरा भरा , साधू निन्दे सोय || " ६

अर्थात् ऊँचे कुल में भले ही जन्म लिया हो , परन्तु कर्म अच्छे न हो तो ऊँची जाति का क्या गौरव ? कलश भले सोने का हो पर इसमें मदिरा भरी हो तो सज्जन या साधुजन अवश्य इसकी निंदा करेंगे |

कबीर ने मूर्खों का संग न करने का उपदेश दिया | कुसंगति के प्रभाव में अच्छी चीज या व्यक्ति भी बुरी बन जाती है --

" मूरिष संग न कीजिए , लोहा जलि न तिराइ |

कदली सीप भुवंग मुषी , एक बूँद तिहूँ भाइ || " ७

अर्थात् मूर्खों का संग कभी नहीं करना चाहिए | क्योंकि जैसे लोहा पानी पर तैर नहीं सकता ,उसी भांति मूर्ख सद्विचारों को अपना नहीं सकता | स्वाति की बूँद कदली (केले) में पड़कर कर्पूर बनती है , सीप में पड़कर मोती बन जाती है और सांप के मुंह में पड़कर विष बनती है | अत: मूर्खों और दुर्जनों का संग नहीं करना चाहिए |

मनुष्य अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किसी भी सीमा तक जा सकता है |

वह अपनी ही कही बात से मुकर्र जाता है | अपनी छवि को अच्छी दिखाने के लिए वह अच्छी और नीतिपूर्ण बातें करता है , पर इनको अपने व्यवहार में नहीं लाता | कबीर ने ऐसे लोगों पर कशाघात किया है -

" जैसी मुख से निकसे , तैसी चाले नाहिं |

मानिष नहिं ते स्वान गति , बाध्या जमपुर जाहि || " ८

अर्थात दूसरों को नीतिविषयक उपदेश देनेवाला स्वयं इसका पालन नहीं करता है , वह मनुष्य नहीं , स्वान है | ऐसे लोग पापों पोटली बाँधकर यमलोक जाते हैं |

मनुष्य स्वार्थवश अपनी आवश्यकताओं से ज्यादा धन कमाने कोशिश में जीवन के उद्देश्य को भूल जाता है | पैसे के पीछे वह ऐसे भागता है कि नीति , अनीति का विवेक भूल जाता है | पूरा जीवन धन संचय में बितानेवाले मनुष्यों पर कबीर ने धारदार कटाक्ष किया है -

" कबीर सो धन संचिये , जो आगे कू होइ |

सीस चडाये पोटली , ले जात न देखा कोइ || " ९

अर्थात् मनुष्य अपनी आवश्यकता अनुसार भविष्य के लिए धन संचय करे यहाँ तक तो वाजिब है , पर अनीति और अधर्म से धन एकत्रित करना पाप है | धन की पोटली बाँधकर आजतक कोई ऊपर नहीं जा पाया है |

कबीर का मानना है कि कलियुग के प्रभाव के कारण समाज में अनीति , अधर्म , असत्य , बेईमानी , दिखावापन , स्वार्थपरता , ढोंग-पाखण्ड , लोभ-लालच आदि की मात्रा बढ़ गई है | साधु-संन्यासी भी इससे बच नहीं पाये हैं -

" कलि का स्वामी लोभिया , मनसा धरी बधाइ |

दैहि पईसा ब्याज कौ , लेखां करता जाइ || " १०

अर्थात् कलियुग में साधु-संन्यासी बड़े लोभी और पाखंडी हो गए हैं | उनकी इच्छाएँ असीमित हो गई हैं| वे बनिए-महाजन से भी नीचे जा गिरे हैं | रूपया-पैसा ब्याज पर देकर पोथियों में उसके ब्याज का लेख-जोखा करते रहते हैं | लगभग छः सौ वर्ष पहले कही गई बात आज भी कितनी सार्थक प्रतीत हो रही है |

कबीर स्वभाव से अक्कड़ , मिजाज से फक्कड़ और अखंड आत्मविश्वासी थे | उनके व्यक्तित्व के बारे में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का यह कथन सर्वथा उचित है - " हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ .....मस्ती , फक्कड़ाना स्वभाव और सबकुछ को झाड-फटकार कर चल देनेवाले तेज ने कबीर को हिन्दी साहित्य का अद्वितीय व्यक्ति बना दिया है ...इसी व्यक्तित्व के कारण कबीर की उक्तियाँ श्रोता को बलपूर्वक आकृष्ट करती है | "११ इस प्रकार कबीर द्वारा लिखे गए दोहे आज भी उतने ही सार्थक और प्रासंगिक लगते है |

❖ संदर्भ-सूची :

१. कबीर ग्रंथावली - संपा. श्यामसुंदर दास - पृष्ठ - ८३

२. वही - पृष्ठ - ७७

३. वही - पृष्ठ - ८३

४. वही - पृष्ठ - ८३

५. वही - पृष्ठ - ७८

६. कबीर ग्रंथावली - संपा. डॉ. पुष्पपाल सिंह - पृष्ठ -१९

७. कबीर ग्रंथावली - संपा. श्यामसुंदर दास - पृष्ठ - ८५

८. वही - पृष्ठ - ७८

९. वही - पृष्ठ - ७४

१०. वही - पृष्ठ - ७६

११. कबीर - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी - पृष्ठ - १७०-१७१